

# Kyklops (ehemals)

## Beispielüberschrift, Demonstrationstext

- [1] [Σιληνός]: Ω **Βρόμιε,** διὰ σὲ **μυρίους** ἔχω πόνους  
o durch dich unzählige
- [2] **νῦν χῶτ'** ἐν ἥβῃ **τούμπον** εύσθένει δέμας·  
nun und als in mein
- [3] **πρῶτον** μέν, ἡνίκ' **έμμανής** **Ἡρας** **ὕπο**  
Nύμφας ὄρείας ἐκλιπών ὥχου τροφούς·
- [4] **ἔπειτά γ'** ἀμφὶ **γηγενῆ** μάχην δορὸς
- [5] **ἐνδέξιος** σῶ ποδὶ **παρασπιστῆς** γεγὼς
- [6] **Ἐγκέλαδον** ἵτεαν εἰς μέσην θενῶν δορὶ
- [7] **ἔκτεινα—** φέρ' ἵδω, **τοῦτ'** ἵδων **ὄναρ** λέγω;  
möge ich sehen, dieses gesehen habend sage ich;
- [8] **οὐ μὰ Δί'**, **ἔπει** καὶ **σκῦλ'** **ἔδειξα** βακχίω.  
Zeus, da Beute zeigte
- [9] **μῆνιν** **ἄειδε** θεὰ **Πηληϊάδεω** **Ἀχιλῆος**
- [10] **οὐλομένην,** **ἡ μυρί'** **Ἀχαιοῖς** **ἄλγε'** **ἔθηκε**,  
verderblich, die unzählige

[777-888] Kommentar zu den Zeilen 1-10: In den ersten 2 Zeilen wurde jedem antiken Wort der (HideTags) Tag gegeben. In den Zeilen 3-4 wurde jedem antiken Wort der Tag (HideTrans) gegeben. In den Zeilen 5-6 wurde jedem antiken Wort beide Tags gegeben. In Zeile 7 wurden Grammatiktags manuell "korrigiert" (von einem Amateur, wie man sieht). In Zeile 8 wurde für das erste Wort "ich töte" statt "ich|tötete" und für das letzte Wort "sage ich" statt sagejlich übersetzt. Das Ergebnis ist Textzeilenverrutschung. In Zeile 9 wurden die ersten 2 Wörter der Übersetzungszeile (nicht bei [Zeus, ...]) unklugerweise gelöscht, anstatt sie mit οὐ(Pt)(HideTrans) μὰ(Prp)(HideTrans) ordnungsgemäß unsichtbar zu machen. Das Resultat ist die wieder Verschiebung. Zwischen Zeile 9 und 10 wurde mit (9ii) eine Insertionszeile eingefügt (2 sprachig in 2 sprachigen translinear.txt und 3 sprachig in 3 sprachigen). In Zeile 10 wurde schlicht der Text durch den gewünschten text durch manuelle Ersetzung ersetzt. Stets wurde bei allen Änderungen die "bereits vorhandene Grundstruktur" der Datei beachtet (z.B. dass vor jeder Zeile ein Sprecher steht in diesem konkreten translinear.txt aus dem Bereich Drama).

- [11] **ἔπεὶ γὰρ** **Ἡρα** **σοι** **γένος** **Τυρσηνικὸν**  
weil denn dir tyrrhenisch
- [12] **ληστῶν** **ἐπῶρσεν,** **ώς** **όδηθείης** **μακράν,**  
damit weit,
- [13] **ἔγὼ** **πυθόμενος** **σὺν** **τέκνοισι** **ναυστολῶ**  
ich erfahren habend mit
- [14] **σέθεν** **κατὰ** **ζήτησιν.** **ἐν** **πρύμνῃ** **δ'** **ἄκρᾳ**  
deiner nach im aber äußersten
- [15] **αὐτὸς** **λαβὼν** **ηὔθυνον** **άμφηρες** **δόρυ,**  
selbst genommen habend zweigriffigen
- [16] **παῖδες** **δ'** **έρετμοῖς** **ἡμενοι** **γλαυκὴν** **ἄλα**  
aber sitzend graublaues
- [17] **ρόθιοισι** **λευκάίνοντες** **έζήτουν** **σ',** **ἄναξ.**  
weiß machend dich,
- [18] **ἡδη** **δὲ** **Μαλέας** **πλησίον** **πεπλευκότας**  
schon aber nahe gesegelt habend
- [19] **ἀπηλιώτης** **ἄνεμος** **έμπνεύσας** **δορὶ**  
auf geblasen habend
- [20] **έξεβαλεν** **ἡμᾶς** **τήνδ'** **ἐς** **Αἰτναίαν** **πέτραν,**  
uns diese in ätnäische
- [21] **ἴν'** **οἱ** **μονῶπες** **ποντίου** **παῖδες** **θεοῦ**  
wo die einäugigen des Meeres
- [22] **ύκλωπες** **οίκούσ'** **ἄντρ'** **ἔρημ'** **άνδροκτόνοι.**  
wohnend öde männer tötend.
- [23] **τούτων** **ἐνὸς** **ληφθέντες** **ἐσμὲν** **ἐν** **δόμοις**  
von diesen ergriffen worden in

- [24] δοῦλοι· καλοῦσι δ' αὐτὸν ὡς λατρεύομεν  
aber ihn dem
- [25] Πολύφημον· ἀντὶ δ' εὐίων βακχευμάτων  
statt aber froher
- [26] ποίμνας Κύκλωπος ἀνοσίου ποιμαίνομεν.  
gottlosen
- [27] παῖδες μὲν οὖν μοι κλιτύων ἐν ἐσχάτοις  
zwar nun mir in äußersten
- [28] νέμουσι μῆλα νέα νέοι πεφυκότες,  
neue junge gewachsen seiend,
- [29] ἔγὼ δὲ πληροῦν πίστρα καὶ σαίρειν στέγας  
ich aber und
- [30] μένων τέταγμαι τάσδε, τῷδε δυσσεβεῖ  
bleibend diese, diesem gottlosen
- [31] Κύκλωπι δείπνων ἀνοσίων διάκονος.  
unheiligen
- [32] καὶ νῦν, τὰ προσταχθέντ', ἀναγκαίως ἔχει  
und nun, die befohlenen, notwendig
- [33] σαίρειν σιδηρὰ τῇδε μ' ἀρπάγη δόμους,  
eiserner dieser mich
- [34] ὡς τόν τ' ἀπόντα δεσπότην Κύκλωπ' ἐμὸν  
damit den auch abwesenden meinen
- [35] καθαροῖσιν ἄντροις μῆλά τ' ἐσδεχώμεθα.  
reinen auch
- [36] ἥδη δὲ παῖδας προσνέμοντας εἰσορῶ  
schon aber weidend
- [37] ποίμνας. τί ταῦτα; μῶν κρότος σικινίδων  
was dieses; etwa
- [38] ὁμοῖος ὑμῖν νῦν τε χῶτε βακχίῳ  
gleich euch nun und wie
- [39] κῶμοι συνασπίζοντες Ἀλθαίας δόμους  
zusammenschließend
- [40] προσῆτ' ἀοιδαῖς βαρβίτων σαυλούμενοι;  
wippend;

## Chor

### Strophe

- [41] [Χορός]: παῖ γενναίων μὲν πατέρων  
edler zwar
- [42] γενναίων τ' ἐκ τοκάδων,  
edler auch aus
- [43] πᾶς δή μοι νίση σκοπέλους;  
wohin denn mir
- [44] οὐ τῷδ' ὑπήνεμος αὔρα  
nicht an diesem windgeschützt
- [45] καὶ ποιηρὰ βοτάνα;  
und grasreich
- [46] δινᾶέν θ' ὅδωρ ποταμῶν  
wirbelnd auch
- [47] ἐν πίστραις κείται πέλας ἄν  
in nahe
- [48] τρων; οὐ σοι βλαχαὶ τεκέων;  
nicht dir

# Mesode

[49] [Χορός]: —ψύττ· ού τάδ' οῦ; ού τάδε νεμῆ

—pst· nicht an diesem nein; nicht an dieser

[50] κλιτὺν δροσεράν;  
kühl;

[51] ὡή, ρίψω πέτρον τάχα σου  
hey, bald deiner

[52] —Ὥπαγ' ω ὄπαγ' ω κεράστα—  
o o

[53] μηλοβότα στασιωρὸν

[54] Κύκλωπος ἀγροβάτα.

# Antistrophe

[55] [Χορός]: σπαργῶντας μαστοὺς χάλασσον·  
anschwollene

[56] δέξαι θηλαῖσι σπορὰς

[57] ἀς λείπεις ἀρνῶν θαλάμοις.  
die

[58] ποθοῦσί σ' ἀμερόκοιτοι  
dich

[59] βλαχαὶ σμικρῶν τεκέων.  
kleiner

[60] εἰς αύλὰν πότ' ἀμφιβαλεῖς  
in wann

[61] ποιηροὺς λείπουσα νομοὺς  
grasige verlassend

[62] Αἴτναίων εἴσω σκοπέλων;  
hinein

[62a] —νύττ· ού τάδ' οῦ; ού τάδε νεμῆ  
—pieks· nicht an diesem nein; nicht an dieser

κλιτὺν δροσεράν;  
kühl;

[62c] ὡή, ρίψω  
hey,  
πέτρον τάχα  
bald  
σου  
deiner

[62d]

[62e]

[62f]

## Epode

- [63] [Χορός]: οὐ τάδε Βρόμιος, οὐ τάδε χοροί  
nicht dieses nicht dieses
- [64] Βάκχαι τε θυρσοφόροι,  
und
- [65] οὐ τυμπάνων ἀλαλαγμοὶ  
nicht
- [66] κρήναις παρ' ὑδροχύτοις,  
bei wasser sprudelnden,
- [67] οὐκ οἴνου χλωρὰὶ σταγόνες·  
nicht grüne
- [68] οὐδ' ἐν Νύσᾳ μετὰ Νυμφᾶν  
auch nicht in mit
- [69] ίακχον ίακχον ώδαν  
iakchon iakchon
- [70] μέλπω πρὸς τὰν Ἀφροδίταν,  
zu der
- [71] ἀν Θηρεύων πετόμαν  
die jagend fliegende
- [72] Βάκχαις σὺν λευκόποσιν  
mit weiß füßigen
- [73] ὡ φίλος·  
o Freund:
- [74] ὡ φίλε Βακχεῖε, ποῖ οἰοπολεῖς;  
o lieber wohin
- [75] ποῖ ξανθὰν χαίταν σείεις;  
wohin blonde
- [76] ἔγὼ δ' ὁ σὸς πρόπολος  
ich aber der dein
- [77] Θητεύω Κύκλωπι
- [78] τῷ μονοδέρκτῳ δοῦλος ἀλαίνων  
dem einäugigen umher streifend
- [80] σὺν τῷδε τράγου χλαίνῃ μελέᾳ  
mit dieser elend
- [81] σᾶς χωρὶς φιλίας.  
deiner ohne

## Episode

- [82] [Σιληνός]: σιγήσατ', ὡ τέκν', ἄντρα δ' ἐς πετρηφῆ  
o aber in fels bedachte
- [83] ποίμνας ἀθροῖσαι προσπόλους κελεύσατε.
- [84] [Χορός]: χωρεῖτ'. ἀτὰρ δὴ τίνα, πάτερ, σπουδὴν ἔχεις;  
aber nun welche,
- [85] [Σιληνός]: ὄρῳ πρὸς ἀκταῖς ναὸς Ἑλλάδος σκάφος  
zu
- [86] κώπης τ' ἄνακτας σὺν στρατηλάτῃ τινὶ<sup>ν</sup>  
auch mit irgendeinem
- [87] στείχοντας ἐς τόδ' ἄντρον· ἀμφὶ δ' αὐχέσι  
schreitend in diese um aber
- [88] τεύχη φέρονται κενά, βορᾶς κεχρημένοι,  
leer, gebraucht habend,
- [89] κρωσσούς θ' ὑδρηλούς. ὡ ταλαιπωροὶ ξένοι,  
auch wasser häutige. o elende
- [90] τίνες ποτ' εἰσίν; οὐκ ἵσασι δεσπότην  
welche jemals nicht
- [91] Πολύφημον οἴός ἐστιν, ἄξενον στέγην  
welcher un gastliche

- [92] **τήνδ'** **έμβεβῶτες** **καὶ Κυκλωπίαν γνάθον**  
diese eingetreten habend und kyklopische
- [93] **τὴν ἀνδροβρῶτα δυστυχῶς ἀφιγμένοι.**  
die menschen fressende unglücklich angekommen seiend.
- [94] **ἀλλ' ἡσυχοι γίγνεσθ', οὐ' ἐκπυθώμεθα**  
aber ruhig damit
- [95] **πόθεν πάρεισι Σικελὸν Αίτναῖον πάγον.**  
woher sizilischen ätnäischen
- [96] [Οδυσσεύς]: **ξένοι, φράσαιτ' ἀν νᾶμα ποτάμιον πόθεν**  
wohl fluss artig woher
- [97] **δίψης ἄκος λάβοιμεν, εἴ τέ τις θέλει**  
wenn auch jemand
- [98] **βορὰν ὁδῆσαι ναυτίλοις κεχρημένοις;**  
gebraucht seienden;
- [99] **τί χρῆμα; Βρομίου πόλιν ἔσβαλεῖν·**  
was
- [100] **Σατύρων πρὸς ἄντροις τόνδ' ὅμιλον εἰσορῶ.**  
bei diesen
- [101] **χαίρειν προσεῖπα πρῶτα τὸν γεραίτατον.**  
zuerst den ältesten.
- [102] [Σιληνός]: **χαῖρ', ὃ ξέν', ὅστις δ' εἴ φράσον πάτραν τε σήν.**  
o welcher aber auch dein.
- [103] [Οδυσσεύς]: **Ἴθακος Ὄδυσσεύς, γῆς Κεφαλλήνων ἄναξ.**
- [104] [Σιληνός]: **οἴδ' ἄνδρα, κρόταλον δριμύ, Σισύφου γένος.**  
scharf,
- [105] [Οδυσσεύς]: **ἐκεῖνος οὗτός είμι· λοιδόρει δὲ μή·**  
jener dieser jedoch nicht-
- [106] [Σιληνός]: **πόθεν Σικελίαν τήνδε ναυστολῶν πάρει;**  
woher diese see fahrend
- [107] [Οδυσσεύς]: **ἔξ Ἱλίου γε κάπο τρωικῶν πόνων.**  
aus doch und von troischen
- [108] [Σιληνός]: **πῶς; πορθμὸν οὐκ ἥδησθα πατρώας χθονός;**  
wie; nicht der väterlichen
- [109] [Οδυσσεύς]: **ἄνέμων θύελλαι δεῦρο μ' ἥρπασαν βίᾳ.**  
hierher mich
- [110] [Σιληνός]: **παπαῖ· τὸν αὐτὸν δαίμον' ἔξαντλεῖς ἔμοί.**  
ach den gleichen mir.
- [111] [Οδυσσεύς]: **ἥ καὶ σὺ δεῦρο πρὸς βίαν ἀπεστάλης;**  
gewiss und du hierher zu
- [112] [Σιληνός]: **ληστὰς διώκων οἱ Βρόμιον ἀνήρπασαν.**  
verfolgend die
- [113] [Οδυσσεύς]: **τίς δ' ἥδε χώρα καὶ τίνες ναίουσί νιν;**  
wer aber diese und welche sie;
- [114] [Σιληνός]: **Αίτναιος ὄχθος Σικελίας ὑπέρτατος.**  
ätnäisch höchster.
- [115] [Οδυσσεύς]: **τείχη δὲ ποῦ στι καὶ πόλεως πυργώματα;**  
aber wo und
- [116] [Σιληνός]: **οὐκ εἴσ' ἔρημοι πρῶνες ἀνθρώπων, ξένε.**  
nicht öde
- [117] [Οδυσσεύς]: **τίνες δ' ἔχουσι γαῖαν; ἦ θηρῶν γένος;**  
welche aber ist
- [118] [Σιληνός]: **Κύκλωπες, ἄντρ' ἔχοντες, οὐ στέγας δόμων.**  
habend, nicht
- [119] [Οδυσσεύς]: **τίνος κλύοντες; ἦ δεδήμευται κράτος;**  
wessen hörend; oder
- [120] [Σιληνός]: **νομάδες· ἀκούει δ' οὐδὲν οὐδεὶς οὐδενός.**  
aber nichts niemand von niemandem.
- [121] [Οδυσσεύς]: **σπείρουσι δ— ἦ τῷ ζῶσι; — Δίημητρος στάχυν;**  
aber— oder dem

- [122] [Σιληνός]: γάλακτι καὶ τυροῖσι καὶ μήλων βορᾶ. und und
- [123] [Οδυσσεύς]: Βρομίου δὲ πῶμ' ἔχουσιν, ἀμπέλου ροαῖς; aber
- [124] [Σιληνός]: ἥκιστα· τοιγὰρ ἄχορον οἰκοῦσι χθόνα. am wenigsten· daher chor los
- [125] [Οδυσσεύς]: φιλόξενοι δὲ χῶσιοι περὶ ξένους; gastfreudlich aber und fromm bezüglich
- [126] [Σιληνός]: γλυκύτατά φασι τὰ κρέα τοὺς ξένους φορεῖν. am süßesten die die
- [127] [Οδυσσεύς]: τί φῆς; βορᾶς χαίρουσιν ἀνθρωποκτόνω; was menschen tötender;
- [128] [Σιληνός]: οὐδεὶς μολὼν δεῦρ' ὅστις οὐ κατεσφάγη. niemand gekommen seiend hierher wer nicht
- [129] [Οδυσσεύς]: αὐτὸς δὲ Κύκλωψ ποιῷ 'στιν; ἦ δόμων ξσω; selbst aber wo gewiss innen;
- [130] [Σιληνός]: φροῦδος πρὸς Αἴτνη θῆρας ἴχνεύων κυσίν. fort zu spürend
- [131] [Οδυσσεύς]: οἰσθ' οὖν οἱ δρᾶσσον, ὡς ἀπαίρωμεν χθονός; also was damit
- [132] [Σιληνός]: οὐκ οἶδ', Οδυσσεῦ· πᾶν δέ σοι δρώημεν ἂν. nicht alles aber dir wohl.
- [133] [Οδυσσεύς]: ὅδησον ἡμῖν σῖτον, οὐ σπανίζομεν. uns deren
- [134] [Σιληνός]: οὐκ ἔστιν, ὥσπερ εἴπον, ἄλλο πλὴν κρέας. nicht so wie anderes außer
- [135] [Οδυσσεύς]: ἀλλ' ἡδὺ λιμοῦ καὶ τόδε σχετήριον. aber angenehm und dieses
- [136] [Σιληνός]: καὶ τυρὸς ὀπίας ἔστι καὶ βοὸς γάλα. und geronnen und
- [137] [Οδυσσεύς]: ἐκφέρετε· φῶς γὰρ ἐμπολήμασιν πρέπει. denn
- [138] [Σιληνός]: σὺ δ' ἀντιδώσεις, εἰπέ μοι, χρυσὸν πόσον; du aber mir, wie viel;
- [139] [Οδυσσεύς]: οὐ χρυσόν, ἀλλὰ πῶμα Διονύσου φέρω. nicht sondern
- [140] [Σιληνός]: ὡ φίλτατ' εἰπών, οὐ σπανίζομεν πάλαι. o liebster gesagt habend, woran seit langem.
- [141] [Οδυσσεύς]: καὶ μὴν Μάρων μοι πῶμ' ἔδωκε, παῖς Θεοῦ. und wahrlich mir
- [142] [Σιληνός]: δὸν ἔξεθρεψα ταῖσδ' ἐγώ ποτ' ἀγκάλαις; den diesen ich einst
- [143] [Οδυσσεύς]: ὁ Βακχίου παῖς, ὡς σαφέστερον μάθης. der damit deutlicher
- [144] [Σιληνός]: ἐν σέλμασιν νεώς ἔστιν, ἦ φέρεις σύ νιν; in oder du ihn;
- [145] [Οδυσσεύς]: ὅδ' ἀσκὸς δὲς κεύθει νιν· ὡς ὥρας, γέρον. dieser der ihn wie
- [146] [Σιληνός]: οὗτος μὲν οὐδ' ἀν τὴν γνάθον πλήσειέ μου. dieser zwar nicht einmal wohl die meiner.
- [147] [Οδυσσεύς]: ναι· ja.
- [147a] δὶς γὰρ τόσον πῶμ' ὄσον ἀν ἔξ ἀσκοῦ ῥυῆ. zweimal denn so viel wie viel wohl aus dem
- [148] [Σιληνός]: καλήν γε κρήνην εἴπας ἥδεῖάν τ' ἐμοί. schöne doch angenehme und mir.
- [149] [Οδυσσεύς]: βούλῃ σε γεύσω πρῶτον ἄκρατον μέθυ; dich zuerst ungemischt
- [150] [Σιληνός]: δίκαιον· ἦ γὰρ γεῦμα τὴν ὠνὴν καλεῖ. gerecht gewiss denn den

[151] [Οδυσσεύς]: **καὶ μὴν ἐφέλκω καὶ ποτῆρ' ἀσκοῦ μέτα.**  
und wahrlich auch mit.

[152] [Σιληνός]: **φέρ' ἔκπάταξον, ὡς ἀναμνησθῶ πιών.**  
damit getrunken habend.

[153] [Οδυσσεύς]: **ἰδού.**  
siehe da.

[153b] [Σιληνός]: **παπαιάξ, ὡς καλὴν ὁσμὴν ἔχει.**  
papaíáx, wie schönen

[154] [Οδυσσεύς]: **εἴδες γὰρ αὐτήν;**  
denn sie;

[154b] [Σιληνός]: **οὐ μὰ Δί', ἀλλ' ὁσφραίνομαι.**  
nicht bei sondern

[155] [Οδυσσεύς]: **γεῦσαί νυν, ὡς ἀν μὴ λόγῳ 'παινῆς μόνον.**  
nun, damit wohl nicht nur.

[156] [Σιληνός]: **βαβαί· χορεῦσαι παρακαλεῖ μ' ὁ Βάκχιος.**  
babái· mich der

[157] **ἄ ἄ ἄ.**  
ah ah ah.

[158] [Οδυσσεύς]: **μῶν τὸν λάρυγγα διεκάναξε σου καλῶς;**  
etwa den deiner gut;

[159] [Σιληνός]: **ῶστ' εἰς ἄκρους γε τοὺς ὄνυχας ἀφίκετο.**  
sodass in äußersten doch die

[160] [Οδυσσεύς]: **πρὸς τῷδε μέντοι καὶ νόμισμα δώσομεν.**  
zu diesem jedoch auch

[161] [Σιληνός]: **χάλα τὸν ἀσκὸν μόνον· ἕα τὸ χρυσίον.**  
den nur· das

[162] [Οδυσσεύς]: **ἐκφέρετέ νυν τυρεύματ' ἢ μήλων τόκου.**  
nun oder

[163] [Σιληνός]: **δράσω τάδ', δλίγον φροντίσας γε δεσποτῶν.**  
dieses, kurz überlegt habend doch

[164] **ώς ἐκπιεῖν γ' ἀν κόλικα μαινοίμην μίαν,**  
so dass doch wohl einen,

[165] **πάντων Κυκλώπων ἀντιδοὺς βοσκήματα,**  
aller zurück gegeben habend

[166] **φίψαι τ' ἐς ἄλμην Λευκάδος πέτρας ἄπο,**  
und in weg,

[167] **ἄπαξ μεθυσθεὶς καταβαλών τε τὰς ὄφρῦς.**  
einmal betrunken worden seiend herab geworfen habend und die

[168] **ώς ὅς γε πίνων μὴ γέγηθε μαίνεται·**  
denn wer doch trinkend nicht

[169] **ἴν' ἔστι τουτί τ' ὄρθὸν ἔξανιστάναι**  
damit dieses hier auch aufrecht

[170] **μαστοῦ τε δραγμὸς καὶ παρεσκευασμένου**  
auch und vorbereitet seienden

[171] **ψαῦσαι χεροῖν λειμῶνος, ὄρχηστύς θ' ἄμα**  
auch zugleich

[172] **κακῶν τε λῆστις. εἴτ' ἐγὼ οὐ κυνήσομαι**  
und dann ich nicht

[173] **τοιόνδε πῶμα, τὴν Κύκλωπος ἀμαθίαν**  
solchen die

[174] **κλαίειν κελεύων καὶ τὸν ὄφθαλμὸν μέσον;**  
befehlend und den mittleren;

[175] [Χορός]: **ἄκου', Όδυσσεῦ· διαλαλήσωμέν τί σοι.**  
etwas dir.

[176] [Οδυσσεύς]: **καὶ μὴν φίλοι γε προσφέρεσθε πρὸς φίλον.**  
und wahrlich Freunde doch zu Freund.

[177] [Χορός]: **ἔλαβετε Τροίαν τὴν Ἐλένην τε χειρίαν;**  
die und mit Gewalt;

[178] [Οδυσσεύς]: **καὶ πάντα γ' οἴκου Πριαμιδῶν ἐπέρσαμεν.**  
und ganz doch

- [179] [Χορός]: **ούκουν, ἐπειδὴ τὴν νεᾶνιν εἴλετε,**  
doch nicht, da die
- [180] **ἄπαντες αὐτὴν διεκροτήσατ' ἐν μέρει,**  
alle sie in
- [181] **ἐπεί γε πολλοῖς ἥδεται γαμουμένη;**  
weil doch vielen heiratend;
- [182] **τὴν προδότιν, ἡ τοὺς θυλάκους τοὺς ποικίλους**  
die die die die bunten
- [183] **περὶ τοῖν σκελοῖν ἴδοῦσα καὶ τὸν χρύσεον**  
um die beiden gesehen habend und den goldenen
- [184] **κλωὸν φοροῦντα περὶ μέσον τὸν αὐχένα**  
tragend um mittleren den
- [185] **ἔξεπτοήθη, Μενέλεων, ἀνθρώπιον**  
menschlich
- [186] **λῶστον, λιποῦσα. μηδαμοῦ γένος ποτὲ**  
besseres, verlassend. nirgend je
- [187] **φῦναι γυναικῶν ὥφελ' — εἰ μὴ 'μοὶ μόνω.**  
wenn nicht mir allein.
- [188] [Σιληνός]: **ἴδοὺ τάδ' ὑμῖν ποιμένων βοσκήματα,**  
siehe da dieses euch
- [189] **ἄναξ Ὄδυσσεῳ, μηκάδων ἀρνῶν τροφαί,**  
blöckend seiender
- [190] **πηκτοῦ γάλακτός τ' οὐ σπάνια τυρεύματα.**  
geronnenen und nicht seltene
- [191] **φέρεσθε· χωρεῖθ' ώς τάχιστ' ἄντρων ἄπο,**  
so am schnellsten weg,
- [192] **βότρυος ἐμοὶ πῶμ' ἀντιδόντες εὔίου.**  
mir zurück gegeben habend des Euios.
- [193] **—οἴμοι· Κύκλωψ ὅδ' ἔρχεται· τί δράσομεν;**  
—weh mir· dieser was
- [194] [Οδυσσεύς]: **ἀπολώλαμεν γάρ, ὦ γέρον· ποῖ χρὴ φυγεῖν;**  
denn, o wohin
- [195] [Σιληνός]: **ἔσω πέτρας τῆσδ', οὐπερ ἀν λάθοιτέ γε.**  
hinein dieses wo eben wohl doch.
- [196] [Οδυσσεύς]: **δεινὸν τόδ' εἴπας, ἀρκύων μολεῖν ἔσω.**  
furchtbar dieses hinein.
- [197] [Σιληνός]: **οὐ δεινόν· εἰσὶ καταφυγὰ πολλὰ πέτρας.**  
nicht schlimm· viele
- [198] [Οδυσσεύς]: **οὐ δῆτ' ἐπεί τὰν μεγάλα γ' ἡ Τροία στένοι,**  
nicht durchaus· denn wohl sehr doch die
- [199] **εἰ φευξόμεσθ' ξν' ἄνδρα, μυρίον δ' ὄχλον**  
wenn einen zahllose aber
- [200] **Φρυγῶν ὑπέστην πολλάκις σὺν ἀσπίδι.**  
oft mit
- [201] **ἀλλ', εἰ θανεῖν δεῖ, κατθανούμεθ' εὐγενῶς,**  
aber, wenn edel,
- [202] **ἡ ζῶντες αίνον τὸν πάρος συσσώσομεν.**  
oder lebend den früher
- [203] [Κύκλωψ]: **ἀνεχε· πάρεχε· τί τάδε· τίς ἡ ράθυμία;**  
was dieses· wer die
- [204] **τί βακχιάζετ'; οὐχὶ Διόνυσος τάδε,**  
was nicht dieses,
- [205] **οὐ κρόταλα χαλκοῦ τυμπάνων τ' ἀράγματα.**  
nicht und
- [206] **πῶς μοι κατ' ἄντρα νεόγονα βλαστήματα;**  
wie mir in die neu geborene
- [207] **ἡ πρός γε μαστοῖς εἰσι χύπο μητέρων**  
wohl bei doch und unter
- [208] **πλευρὰς τρέχουσι, σχοινίνοις τ' ἐν τεύχεσιν**  
aus Binsen und in

- [209] πλήρωμα τυρῶν ἔστιν ἔξημελγμένον;  
aus gemolken;
- [210] τί φατε; τί λέγετε; τάχα τις ὑμῶν τῷ ξύλῳ  
was was wohl jemand von euch dem
- [211] δάκρυσα μεθῆσει βλέπετε' ἄνω καὶ μὴ κάτω.  
hinauf und nicht hinab.
- [212] [Χορός]: Ιδού, πρὸς αὐτὸν τὸν Δί' ἀνακεκύφαμεν,  
siehe da, zu ihm den
- [213] καὶ τάστρα καὶ τὸν Ὠρίωνα δέρκομαι.  
und und den
- [214] [Κύκλωψ]: ἄριστόν ἔστιν εὖ παρεσκευασμένον;  
das Beste gut zubereitet;
- [215] [Χορός]: πάρεστιν. ὁ φάρυγξ εύτρεπής ἔστω μόνον.  
der bereit nur.
- [216] [Κύκλωψ]: ἦ καὶ γάλακτός είσι κρατῆρες πλέω;  
wohl auch voll;
- [217] [Χορός]: ὥστ' ἐκπιεῖν γέ σ', ἦν θέλης, ὅλον πίθον.  
so dass doch dich, wenn ganz
- [218] [Κύκλωψ]: μήλειον ἦ βόειον ἷ μεμιγμένον;  
schaf milch ig oder rind milch ig oder vermischt;
- [219] [Χορός]: ὥν ἀν θέλης σύ, μὴ 'μὲ καταπίης μόνον.  
wovon wohl du, nicht mich nur.
- [220] [Κύκλωψ]: ἡκιστ'- ἐπεί μ' ἀν ἐν μέσῃ τῇ γαστέρι  
am wenigsten denn weil mich wohl in mittleren der
- [221] πηδῶντες ἀπολέσαιτ' ἀν ύπο τῶν σχημάτων.  
springend wohl unter die
- [222] ἔα· τίν' ὅχλου τόνδ' ὄρῳ πρὸς αὐλίοις;  
he· welchen diesen bei
- [223] λησταί τινες κατέσχον ἷ κλώπες χθόνα;  
einige oder
- [224] ὄρῳ γέ τοι τούσδ' ἄρνας ἐξ ἄντρων ἐμῶν  
doch gewiss diese hier aus meiner
- [225] στρεπταῖς λύγοισι σῶμα συμπεπλεγμένους,  
gedrehten zusammen geflochtene,
- [226] τεύχη τε τυρῶν συμμιγῆ, γέροντά τε  
und gemischt zusammen, und
- [227] πληγαῖς πρόσωπον φαλακρὸν ἐξωδηκότα.  
kahl auf geschwollen.
- [228] [Σιληνός]: ὕμοι, πυρέσσω συγκεκομένος τάλας.  
weh mir, zusammen geschlagen Unglücklicher.
- [229] [Κύκλωψ]: ύπο τοῦ; τίς ἐς σὸν κρᾶτ' ἐπύκτευσεν, γέρον;  
von wem; wer in deinen
- [230] [Σιληνός]: ύπο τῶνδε, Κύκλωψ, ὅτι τὰ σ' οὐκ εἴων φέρειν.  
von diesen, weil die deinen nicht
- [231] [Κύκλωψ]: οὐκ ἥσαν ὄντα θεόν με καὶ θεῶν ἄπο;  
nicht seiend mich und her;
- [232] [Σιληνός]: ἔλεγον ἐγὼ τάδ'- οἱ δ' ἐφόρουν τὰ χρήματα·  
ich dieses die aber die
- [233] καὶ τόν γε τυρὸν οὐκ ἐῶντος ἥσθιον  
und den doch nicht nicht zulassend
- [234] τούς τ' ἄρνας ἐξεφοροῦντο· δήσαντες δὲ σὲ  
die und gebunden habend aber dich
- [235] κλωῶ τριπήχει, κάτα τὸν ὄφθαλμὸν μέσον  
drei Ellen lang, und dann den mittleren
- [235a] [Σιληνός]: [[Zeile Lost]]
- [236] τὰ σπλάγχν' ἔφασκον ἐξαμήσεσθαι βίᾳ,  
die
- [237] μάστιγί τ' εὖ τὸ νῶτον ἀποθλίψειν σέθεν,  
und gut den deiner,

- [238] **κάπειτα** συνδήσαντες ἐς θάδώλια  
und dann zusammen gebunden habend in
- [239] **τῆς νηὸς** ἐμβαλόντες ἀποδώσειν τινὶ<sup>ν</sup>  
des hinein geworfen habend jemandem
- [240] **πέτρους μοχλεύειν,** ἢ 'ς μυλῶνα καταβαλεῖν.  
oder in
- [241] [Κύκλωψ]: **ἄληθες;** οὔκουν κοπίδας ώς τάχιστ' ἵων  
wahr; demnach so wie schnellst gehend
- [242] **θήξεις μαχαίρας καὶ μέγαν φάκελον ξύλων**  
und großen
- [243] **ἐπιθεὶς ἀνάψεις;** ώς σφαγέντες αὐτίκα  
auf gelegt habend damit geschlachtet worden seiend sofort
- [244] **πλήσσουσι νηδὺν τὴν ἐμὴν ἀπ' ἄνθρακος**  
den meinen von
- [245] **Θερμὴν ἔδοντος δαΐτα τῷ κρεανόμῳ,**  
heiße fressenden dem
- [246] **τὰ δ' ἐκ λέβητος ἐφθὰ καὶ τετηκότα.**  
die aber aus gekochten und geschmolzenen.
- [247] **ώς ἔκπλεώς γε δαιτός εἰμ' ὄρεσκόου·**  
so über voll doch berg weidig-
- [248] **ἄλις λεόντων ἔστι μοι θοινωμένῳ**  
genug mir geschmaust habenden
- [249] **ἔλαφων τε, χρόνιος δ' εἴμ' ἀπ' ἀνθρώπων βορᾶς.**  
und, lang zeitlich aber weg von
- [250] [Σιληνός]: **τὰ καινά γ' ἐκ τῶν ήθαδων, ὡς δέσποτα,**  
die Neuen doch aus den o
- [251] **ἡδίον' ἔστιν. οὐ γὰρ αὖ νεωστί γε**  
angenehmer nicht denn wieder kürzlich doch
- [252] **ἄλλοι πρὸς ἄντρα σοι ἐσαφίκοντο ξένοι.**  
andere zu dir
- [253] [Οδυσσεύς]: **Κύκλωψ, ἄκουσον ἐν μέρει καὶ τῶν ζένων.**  
in auch der
- [254] **ἡμεῖς βορᾶς χρήζοντες ἐμπολὴν λαβεῖν**  
wir bedarfend
- [255] **σῶν ἄσσον ἄντρων ἥλθομεν νεώς ἄπο.**  
deiner näher weg.
- [256] **τοὺς δ' ἄρνας ἡμῖν οὗτος ἀντ' οἶνου σκύφου**  
die aber uns dieser statt
- [257] **ἀπημπόλα τε κάδίδου πιεῖν λαβὼν**  
und genommen habend
- [258] **ἐκὼν ἐκοῦσι, κούδεν ἦν τούτων βίᾳ.**  
freiwillig den Freiwilligen, von diesen
- [259] **ἄλλ' οὗτος ὑγιὲς οὐδὲν ὅν φησιν λέγει,**  
aber dieser gesund nichts wovon
- [260] **ἔπειτα κατελήφθη σοῦ λάθρᾳ πωλῶν τὰ σά.**  
weil von dir heimlich verkaufend die deinen.
- [261] [Σιληνός]: **ἔγω; κακῶς γὰρ ἐξόλοι'.**  
ich; schlecht denn
- [261b] [Οδυσσεύς]: **εἰ ψεύδομαι.**  
wenn
- [262] [Σιληνός]: **μὰ τὸν Ποσειδῶ τὸν τεκόντα σ', ὡς Κύκλωψ,**  
bei den den gezeugt habenden dich, o
- [263] **μὰ τὸν μέγαν Τρίτωνα καὶ τὸν Νηρέα,**  
bei den großen und den
- [264] **μὰ τὴν Καλυψὼ τάς τε Νηρέως κόρας,**  
bei die die auch
- [265] **τά θ' ιερὰ κύματ' ἰχθύων τε πᾶν γένος,**  
die auch heiligen auch ganzes
- [266] **ἀπώμοσ', ὡς κάλλιστον ὡς Κυκλώπιον,**  
o schönstes o kykloisch Wesen,

- [267] ὡς δεσποτίσκε, μὴ τὰ σ' ἔξοδῶν ἐγὼ  
o nicht die dich ich
- [268] ξένοισι χρήματ'. ἡ κακῶς οὗτοι κακοὶ  
oder schlimm diese Schlechte
- [269] οἱ παῖδες ἀπόλοιυθ', οὓς μάλιστ' ἐγὼ φιλῶ.  
die welche am meisten ich
- [270] [Χορός]: αὐτὸς ἔχ'. ἔγωγε τοῖς ξένοις τὰ χρήματα  
selbst ich jedenfalls den die
- [271] περνάντα σ' εἴδον· εἰ δ' ἐγὼ ψευδῆ λέγω,  
verkaufend dich wenn aber ich Falsches
- [272] ἀπόλοιθ' ὁ πατήρ μου· τοὺς ξένους δὲ μὴ ἀδίκει.  
der mein- die aber nicht
- [273] [Κύκλωψ]: ψεύδεσθ'. ἔγωγε τῷδε τοῦ Παδαμάνθυος  
ich jedenfalls diesem des
- [274] μᾶλλον πέποιθα καὶ δικαιότερον λέγω.  
mehr und gerechter
- [275] θέλω δ' ἐρέσθαι· πόθεν ἐπλεύσατ', ως ξένοι;  
aber woher o
- [276] ποδαποί; τίς ύμᾶς ἔξεπαίδευσεν πόλις;  
welcher Herkunft: wer euch
- [277] [Οδυσσεύς]: Ιθακήσιοι μὲν τὸ γένος, Ἰλίου δ' ἄπο,  
zwar das aber weg von,
- [278] πέρσαντες ἄστυ, πνεύμασιν θαλασσίος  
verheert habend meerischen
- [279] σὴν γαῖαν ἔξωσθέντες ἥκομεν, Κύκλωψ.  
dein hinaus gestoßen worden seiend
- [280] [Κύκλωψ]: ἡ τῆς κακίστης οἱ μετήλθεθ' ἀρπαγὰς  
wahrlich der schlechtesten die
- [281] Ἐλένης Σκαμάνδρου γείτον' Ἰλίου πόλιν;
- [282] [Οδυσσεύς]: οὗτοι, πόνον τὸν δεινὸν ἔξηντληκότες.  
diese, die schreckliche erschöpft habend.
- [283] [Κύκλωψ]: αἰσχρὸν στράτευμά γ', οἵτινες μιᾶς χάριν  
schändliches doch, welche einer wegen
- [284] γυναικὸς ἔξεπλεύσατ' ἐς γαῖαν Φρυγῶν.  
in
- [285] [Οδυσσεύς]: θεοῦ τὸ πρᾶγμα· μηδέν' αἰτιῶ βροτῶν.  
die niemanden
- [286] ἡμεῖς δέ σ', ως θεοῦ ποντίου γενναῖε παῖ,  
wir aber dich, o meerischen edler
- [287] ίκετεύομέν τε καὶ λέγομεν ἐλευθέρως·  
auch und frei-
- [288] μὴ τλῆς πρὸς ἄντρα σοι ἐσαφιγμένους φίλους  
nicht zu dir fest angeheftet worden seiend
- [289] κτανεῖν βοράν τε δυσσεβῆ θέσθαι γνάθοις·  
auch un fromme
- [290] οἱ τὸν σόν, ὕναξ, πατέρ' ἔχειν νεῶν ἔδρας  
die den deinen,
- [291] ἐρρυσάμεσθα γῆς ἐν Ἐλλάδος μυχοῖς.  
in
- [292] ιερεύς τ' ἄθραυστος Ταινάρου μένει λιμὴν  
auch ungebrochen
- [293] Μαλέας τ' ἄκροι κευθμῶνες ἡ τε Σουνίου  
auch hohe die auch
- [294] δίας Ἀθάνας σῶς ὑπάργυρος πέτρα  
göttlichen heil silber glänzende
- [295] Γεραίστιοί τε καταφυγαί· τὰ θ' Ἐλλάδος  
geraisti sche auch die auch
- [296] δύσφρον' ὄνειδη Φρυξὶν οὐκ ἐδώκαμεν·  
schwer tragbare nicht

- [297] ὅν καὶ σὺ κοινοῖ· γῆς γὰρ Ἐλλάδος μυχοὺς  
deren und du denn
- [298] οἰκεῖς ὑπ' Αἴτνῃ, τῇ πυριστάκτῳ πέτρᾳ.  
unter dem feuer tropfenden
- [299] νόμος δὲ θυητοῖς, εἰ λόγους ἀποστρέψῃ,  
aber den Sterblichen, wenn
- [300] ίκέτας δέχεσθαι ποντίους ἐφθαρμένους  
seebürtige verdorben seiende
- [301] ξένιά τε δοῦναι καὶ πέπλοις ἐπαρκέσαι,  
auch und
- [302] οὐκ ἀμφὶ βουπόροισι πηχθέντας μέλη  
nicht um Rind bohrgen fest gemacht worden
- [303] ὄβελοῖσι νηδὺν καὶ γυνάθον πλῆσαι σέθεν.  
und deiner.
- [304] ἄλις δὲ Πριάμου γαῖ' ἔχήρωσ' Ἐλλάδα,  
genug aber
- [305] πολλῶν νεκρῶν πιοῦσα δοριπετῇ φόνον,  
vieler getrunken habend speer gegossenen
- [306] ἀλόχους τ' ἀνάνδρους γραῦς τ' ἄπαιδας ὥλεσεν  
auch mann lose auch kinder lose
- [307] πολιούς τε πατέρας. εἰ δὲ τοὺς λελειμένους  
ergrauter auch wenn aber die zurück gelassen seienden
- [308] σὺ συμπυρώσας δαῖτ' ἀναλώσεις πικράν,  
du zusammen gebrannt habend bittere,
- [309] ποῖ τρέψεται τις; ἄλλ' ἔμοι πιθοῦ, Κύκλωψ.  
wohin jemand; aber mir
- [310] πάρες τὸ μάργον σῆς γυνάθου, τὸ δ' εύσεβες  
das wütende deiner das aber fromme
- [311] τῆς δυσσεβείας ἀνθελοῦ πολλοῖσι γὰρ  
der vielen denn
- [312] κέρδη πονηρὰ ζημίαν ἡμείψατο.  
schlechte
- [313] [Σιληνός]: παραινέσαι σοι βούλομαι· τῶν γὰρ κρεῶν  
dir der denn
- [314] μηδὲν λίπης τοῦδ', ἦν τε τὴν γλῶσσαν δάκης,  
nichts dieses, wenn auch die
- [315] κομψὸς γενήσῃ καὶ λαλίστατος, Κύκλωψ.  
feinsinnig und meist redselig,
- [316] [Κύκλωψ]: ὁ πλοῦτος, ἀνθρωπίσκε, τοῖς σοφοῖς θεός,  
der den Weisen
- [317] τὰ δ' ἄλλα κόμποι καὶ λόγων εύμορφίατ.  
die aber anderen und
- [318] ἄκρας δ' ἐναλίας ἀς καθίδρυται πατὴρ  
Kaps aber meerische welche
- [319] χαίρειν κελεύω· τί τάδε προυστήσω λόγω;  
was dieses
- [320] Ζηνὸς δ' ἐγὼ κεραυνὸν οὐ φρίσσω, ξένε,  
aber ich nicht
- [321] οὐδ' οἴδ' ὅ τι Ζεύς ἐστ' ἔμοις κρείσσων θεός.  
und nicht was was von mir stärker
- [322] οὐ μοι μέλει τὸ λοιπόν· ὡς δ' οὐ μοι μέλει,  
nicht mir das Übrige wie aber nicht mir
- [323] ἄκουσον. ὅταν ἄνωθεν ὅμβρον ἐκχέῃ,  
wenn von oben
- [324] ἐν τῇδε πέτρᾳ στέγνυ' ἔχων σκηνώματα,  
in diesem habend
- [325] ἦ μόσχον ὄπτον ἦ τι θήρειον δάκος  
oder gebraten oder irgendein wild Tier
- [326] δαινύμενος, εὖ τέγγων τε γαστέρ' ὑπτίαν,  
schmausend, gut tränkend auch rücklings,

- [327] ἐπεκπιῶν γάλακτος ἀμφορέα, πέπλουν  
aus getrunken
- [328] κρούω, Διὸς βρονταῖσιν εἰς ἔριν κτυπῶν.  
in schlagend.
- [329] ὅταν δὲ βορέας χιόνα Θρήκιος χέη,  
wenn aber thrakisch
- [330] δοραῖσι θηρῶν σῶμα περιβαλῶν ἐμὸν  
umgelegt habend meinen
- [331] καὶ πῦρ ἀναίθων— χιόνος οὐδέν μοι μέλει.  
und anzündend— nichts mir
- [332] ἡ γῆ δ' ἀνάγκη, καν θέλη καν μὴ θέλη,  
die aber auch wenn auch wenn nicht
- [333] τίκτουσα ποίαν τάμα πιαίνει βοτά.  
gebärend die meinen
- [334] ἀγὼ οὔτινι θύω πλὴν ἐμοί, θεοῖσι δ' οὐ,  
ich keinem außer mir, aber nicht,
- [335] καὶ τῇ μεγίστῃ, γαστρὶ τῇδε, δαιμόνων.  
auch der größten, diesem,
- [336] ὡς τούμπιεῖν γε κὰμφαγεῖν τούφ' ἡμέραν  
damit doch das auf den Tag
- [337] Ζεὺς οὗτος ἀνθρώποισι τοῖσι σώφροσιν,  
dieser den besonnenen,
- [338] λυπεῖν δὲ μηδὲν αὐτόν. οἱ δὲ τοὺς νόμους  
aber nichts sich selbst. die aber die
- [339] ἔθεντο ποικίλλοντες ἀνθρώπων βίον,  
verschieden machend
- [340] κλαίειν ἄνωγα· τὴν δ' ἐμὴν ψυχὴν ἐγὼ<sup>1</sup>  
die aber meine ich
- [341] οὐ παύσομαι δρῶν εὖ— κατεσθίων τε σέ.  
nicht tuend gut— hinunter fressend auch dich.
- [342] ξενιά τε λήψη τοιάδ', ώς ἄμεμπτος ὦ,  
auch solche, damit untadelig o,
- [343] πῦρ καὶ πατρῶον τόνδε λέβητά γ', ὃς ζέσας  
und väterlichen diesen doch, der gekocht habend
- [344] σὴν σάρκα διαφόρητον ἀμφέξει καλῶς.  
dein zer legt gut.
- [345] ἀλλ' ἔρπετ' εἶσω, τῷ κατ' αὔλιον θεῶ  
aber hinein, dem bei hof ständig
- [346] ἵν' ἀμφὶ βωμὸν στάντες εύωχῆτε με.  
damit um gestellt seiend mich.
- [347] [Οδυσσεύς]: αἰαῖ, πόνους μὲν Τρωικοὺς ὑπεξέδυν  
weh, zwar troische
- [348] θαλασσίους τε, νῦν δ' ἐς ἀνδρὸς ἀνοσίου  
meerische auch, nun aber in gottlosen
- [349] γνώμην κατέσχον ἀλίμενόν τε καρδίαν.  
hafen los auch
- [350] ὦ Παλλάς, ὦ δέσποινα Διογενὲς θεά,  
o o Zeus geborene
- [351] νῦν νῦν ἄρηξον· κρείσσονας γὰρ ίλίου  
jetzt jetzt größere denn
- [352] πόνους ἀφίγματι κάπι κινδύνου βάθρα.  
und auf
- [353] σύ τ', ὦ φαενυῶν ἀστέρων οἰκῶν ἔδρας  
du auch, o strahlender
- [354] Ζεῦ ξένι', ὄρα τάδ· εἰ γὰρ αὐτὰ μὴ βλέπεις,  
Gast schützer, dieses wenn denn sie nicht
- [355] ἄλλως νομίζῃ Ζεὺς τὸ μηδὲν ὧν θεός.  
anders das Nichts seiend

# Chor

## Strophe

- [356] [Χορός]: **Εύρείας φάρυγγος, ὡς Κύκλωψ,**  
der weiten o
- [357] **ἀναστόμου τὸ χεῖλος· ὡς ἔτοιμά σοι**  
des auf gespernten die wie bereit dir
- [358] **ἔφθα καὶ ὁπτὰ καὶ ἀνθρακιᾶς ἄπο**  
Gekochtes und Gebratenes und weg
- [359] **χναύειν, βρύκειν,**
- [359a] **κρεοκοπεῖν μέλη ξένων,**
- [360] **δασυμάλλω ἐν αἰγίδι κλινομένῳ.**  
zottig wolligen in gelagertem.

## Mesode

- [361] [Χορός]: **Μή μοι μὴ προσδίδου·**  
nicht mir nicht
- [362] **μόνος μόνω γέμιζε πορθμίδος σκάφος.**  
allein dem Alleinen
- [363] **χαιρέτω μὲν αὐλίς ἄδε,**  
zwar diese,
- [364] **χαιρέτω δὲ θυμάτων**  
aber
- [365] **ἀποβώμιος ἀν ἔχει θυσίαν**  
vom Altar weg die
- [366] **Κύκλωψ Αἰτναῖος ξενικῶν**  
Ätna isch der Fremden
- [367] **κρεῶν κεχαρμένος βορᾶ.**  
erfreut

## Antistrophe

- [369] [Χορός]: **Νηλής, ὡς τλάμον, ὅστις δωμάτων**  
hartherzig, o Elander, wer
- [370] **ἐφεστίους ξενικοὺς ἱκτῆρας ἐκθύει δόμων,**  
herd häusige fremde
- [372] **κόπτων βρύκων**  
schneidend knirschend
- [373] **ἔφθα τε δαινύμενος, μυσαροῖσί τ' ὄδοϋσιν**  
Gekochtes auch schmausend, widerlichen auch
- [374] **ἀνθρώπων θέρμ' ἀπ' ἀνθράκων κρέα,**  
warm von

[374a] [Χορός:] [[Zeile Lost]]

[374b]

**Μή μοι μὴ προσδίδου·**  
nicht mir nicht

[374c]

**μόνος μόνω γέμιζε πορθμίδος**  
allein dem Alleinen

**σκάφος.**

[374d]

χα  
με  
με  
αύ  
άδ

die

[374e]

[374f]

[374g]

## Episode

- [375] [Οδυσσεύς]: Ὡς Ζεῦ, τί λέξω, δείν' ίδων ἄντρων ἔσω  
o was Schreckliches gesehen habend innen
- [376] κού πιστά, μύθοις εἰκότ', οὐδ' ἔργοις βροτῶν;  
und nicht glaubhaft, ähnlich, auch nicht
- [377] [Χορός]: τί δ' ἔστ', Οδυσσεῦ; μῶν τεθοίναται σέθεν  
was aber etwa deiner
- [378] φίλους ἐταίρους ἀνοσιώτατος Κύκλωψ;  
liebe un heiligster
- [379] [Οδυσσεύς]: δισσούς γ' ἀθρήσας κάπιβαστάσας χεροῖν,  
zwei doch erblickt habend und aufgehoben habend
- [380] οἱ σαρκὸς εἶχον εύτραφέστατον πάχος.  
die wohl genährteste
- [381] [Χορός]: πῶς, ὡς ταλαίπωρ', ἥτε πάσχοντες τάδε;  
wie, o Elender, leidend dieses;
- [382] [Οδυσσεύς]: ἐπεὶ πετραίαν τήνδ' ἐσήλθομεν χθόνα,  
als felsige diese
- [383] ἀνέκαυσε μὲν πῦρ πρῶτον, ύψηλῆς δρυδὸς  
zwar zuerst, hohen
- [384] κορμοὺς πλαστείας ἐσχάρας βαλὼν ἐπι,  
breite geworfen habend auf,
- [385] τρισσῶν ἀμαξῶν ώς ἀγώγιμον βάρος.  
von dreien wie tragbar
- [386] ἐπειτα φύλλων ἐλατίνων χαμαιπετῆ  
dann der Tanne Boden liegend
- [387] ἐστρωσεν εύνην πλησίον πυρὸς φλογί.  
nahe
- [388] κρατῆρα δ' ἐξέπλησεν ώς δεκάμφορον,  
aber wie zehn Amphoren fassend,
- [389] μόσχους ἀμέλξας, λευκὸν ἐσχέας γάλα.  
gemolken habend, weiß gegossen habend
- [390] σκύφος τε κισσοῦ παρέθετ' εἰς εὔρος τριῶν  
und bis auf dreier
- [391] πήχεων, βάθος δὲ τεσσάρων ἐφαίνετο.  
aber vierer
- [392] καὶ χάλκεον λέβητ' ἐπέζεσεν πυρί,  
und bronzen
- [393] ὄβελούς τ', ἄκρους μὲν ἐγκεκαυμένους πυρί,  
und, spitze zwar angesengt worden seiend

- [394] ξεστοὺς δὲ δρεπάνῳ τάλλα, παλιούρου κλάδων,  
geglättete aber die übrigen,
- [395] αἰτναιά τε σφαγεῖα πελέκεων γνάθοις.  
ātnäische und
- [396] ως δ' ἦν ἔτοιμα πάντα τῷ θεοστυγεῖ  
als aber bereit alles dem Götter verhassten
- [397] Ἀιδου μαγείρῳ, φῶτε συμμάρφως δύο  
zusammen gefasst habend zwei
- [398] ἔσφαζ' ἐταίρων τῶν ἐμῶν, ὥσθμῷ θ' ἐνὶ<sup>1</sup>  
der meinen, und in
- [399] τὸν μὲν λέβητος ἐς κύτος χαλκήλατον,  
den zwar in bronze gehämmert,
- [400] τὸν δ' αὖ, τένοντος ἀρπάσας ἄκρου ποδός,  
den aber wieder, gefasst habend äußersten
- [401] παίων πρὸς ὁξὺν στόνυχα πετραίου λίθου,  
schlagend gegen scharf felsigen
- [402] ἐγκέφαλον ἐξέρρανε, καὶ καθαρπάσας  
und weg gerafft habend
- [403] λάβρῳ μαχαίρᾳ σάρκας ἐξώπτα πυρί<sup>1</sup>  
heftig
- [404] τὰ δ' ἐς λέβητ' ἐφῆκεν ἔψεσθαι μέλη  
die aber in
- [405] ἐγὼ δ' ὁ τλήμων δάκρυ' ἀπ' ὄφθαλμῶν χέων  
ich aber der leidende von gießend
- [406] ἔχριμπτόμην Κύκλωπι κάδιακόνουν·
- [407] ἄλλοι δ' ὅπως ὅρνιθες ἐν μυχοῖς πέτρας  
andere aber wie in
- [408] πτήξαντες εἶχον, αἷμα δ' οὐκ ἐνῇν χροῖ.  
zusammen gekauert habend aber nicht
- [409] ἐπεὶ δ' ἐταίρων τῶν ἐμῶν πλησθεὶς βορᾶς  
als aber der meinen gesättigt worden seiend
- [410] ἀνέπεσε, φάρυγος αἰθέρ' ἐξείς βαρύν,  
aus lassend schwer,
- [411] ἐσῆλθε μοί τι θεῖον· ἐμπλήσας σκύφος  
mir etwas göttlich gefüllt habend
- [412] Μάρωνος αὐτῷ τοῦτο προσφέρω πιεῖν,  
ihm dieses
- [413] λέγων τάδε· Ω τοῦ ποντίου θεοῦ Κύκλωψ,  
sagend dieses o des meerischen
- [414] σκέψαι τόδε οἶον Ἐλλὰς ἀμπέλων ἄπο  
dieses welcherlei von
- [415] θεῖον κομίζει πῶμα, Διονύσου γάνος.  
göttlichen
- [416] ὁ δ' ἔκπλεως ὡν τῆς ἀναισχύντου βορᾶς  
der aber übergoll seiend der schamlosen
- [417] ἐδέξατ' ἔσπασέν τ' ἄμυστιν ἐλκύσας  
und in einem Zug gezogen habend
- [418] κάπηνεσ' ἄρας χεῖρα· Φίλτατε ξένων,  
erhoben habend Liebster
- [419] καλὸν τὸ πῶμα δαιτὶ πρὸς καλῇ δίδως.  
schön der zu schön
- [420] ἡσθέντα δ' αὐτὸν ως ἐπησθόμην ἐγώ,  
genossen habend aber ihn als ich,
- [421] ἄλλην ἔδωκα κύλικα, γιγνώσκων ὅτι  
eine andere erkennend dass
- [422] τρώσει νιν οῖνος καὶ δίκην δώσει τάχα.  
ihn und bald.
- [423] καὶ δὴ πρὸς ὧδας εἴρπ'. ἐγὼ δ' ἐπεγχέων  
und in der Tat zu ich aber nach gießend

- [424] **ἄλλην** **έπ’** **ἄλλῃ** **σπλάγχν’** **έθέρμαινον ποτῷ.**  
eine andere auf anderer
- [425] **ἄδει** **δὲ** **παρὰ** **κλαίουσι** **συνναύταις** **ἔμοις**  
aber bei weinenden meinen
- [426] **ἄμουσο’,** **ἐπηχεῖ** **δ’** **ἄντρον.** **ἐξελθὼν** **δ’** **ἐγὼ**  
un musisch, aber hinaus gegangen habend aber ich
- [427] **σιγῇ.** **σὲ** **σῶσαι** **κάμ’,** **ἐὰν** **βούλῃ,** **Θέλω.**  
dich und mich, wenn
- [428] **ἀλλ’** **εἴπατ’** **εἴτε** **χρήζετ’** **εἴτ’** **οὐ** **χρήζετε**  
sondern ob oder nicht
- [429] **φεύγειν** **ἄμεικτον** **ἄνδρα** **καὶ** **τὰ** **Βακχίου**  
un gemischt und die
- [430] **ναίειν** **μέλαθρα** **Δαναίδων** **νυμφῶν** **μέτα.**  
inmitten.
- [431] **ὸ** **μὲν** **γὰρ** **ἔνδον** **σὸς** **πατὴρ** **τάδ’** **ἥνεσεν.**  
der zwar denn drinnen dein dieses
- [432] **ἀλλ’** **ἀσθενῆς** **γὰρ** **κάποκερδαίνων** **ποτοῦ,**  
aber schwach denn und Gewinn ziehend
- [433] **ώσπερ** **πρὸς** **ἰξῷ** **τῇ** **κύλικι** **λελημένος**  
wie durch der festgeklebt worden seiend
- [434] **πτέρυγας** **ἀλύει.** **σὺ** **δέ—** **νεανίας** **γὰρ** **εἴ—**  
du aber— denn
- [435] **σώθητι** **μετ’** **ἔμοι** **καὶ** **τὸν** **ἀρχαῖον** **φίλον**  
mit mir und den alten Freund
- [436] **Διόνυσον** **ἀνάλαβ’,** **οὐ** **Κύκλωπι** **προσφερῆ.**  
nicht zuträglich.
- [437] [Χορός]: **ὦ** **φίλτατ’,** **εἰ** **γὰρ** **τήνδ’** **ἴδοιμεν** **ἡμέραν,**  
o liebster, wenn denn diese
- [438] **Κύκλωπος** **ἐκψυγόντες** **ἀνόσιον** **κάρα.**  
entronnen habend unheiligen
- [439] **ώς** **διὰ** **μακροῦ** **γε** **τὸν** **σίφωνα** **τὸν** **φίλον**  
wie durch langen doch den den lieben
- [440] **χηρεύομεν.** **—τὸν** **δ’** **οὐκ** **ἔχομεν** **κατ’** **αὖ** **φαγεῖν.**  
—den aber nicht gemäß deren
- [441] [Οδυσσεύς]: **ἄκουε** **δή** **νυν** **ἡν** **ἔχω** **τιμωρίαν**  
nun wirklich jetzt welche
- [442] **Θηρὸς** **πανούργου** **σῆς** **τε** **δουλείας** **φυγήν.**  
gerissenen deiner und
- [443] [Χορός]: **λέγ’,** **ώς** **Ἀσιάδος** **οὐκ** **ἀν** **ἡδιον** **ψόφου**  
wie asiatischen nicht wohl angenehmeren
- [444] **κιθάρας** **κλύοιμεν** **ἢ** **Κύκλωπ’** **όλωλότα.**  
oder zugrunde gegangen habend.
- [445] [Οδυσσεύς]: **ἐπὶ** **κῶμον** **ἔρπειν** **πρὸς** **κασιγνήτους** **Θέλει**  
zu zu
- [446] **Κύκλωπας** **ἡσθεὶς** **τῶδες** **Βακχίου** **ποτῷ.**  
erfreut worden seiend diesem
- [447] [Χορός]: **ξυνῆκ’** **ἔρημον** **ξυλλαβὼν** **δρυμοῖσί** **νιν**  
einsam ergriffen habend ihn
- [448] **σφάξαι** **μενοινᾶς,** **ἢ** **πετρῶν** **ώσαι** **κάτω.**  
mit Verlangen, oder hinab.
- [449] [Οδυσσεύς]: **οὐδὲν** **τοιοῦτον·** **δόλιος** **ἢ** **πιθυμία.**  
nichts der Art listig die
- [450] [Χορός]: **πῶς** **δαί;** **σοφόν** **τοί** **σ’** **ὄντ’** **ἀκούομεν** **πάλαι.**  
wie denn; weise ja dich seiend seit langem.
- [451] [Οδυσσεύς]: **κώμου** **μὲν** **αὐτὸν** **τοῦδ’** **ἀπαλλάξαι,** **λέγων**  
zwar ihn von diesem sagend
- [452] **ώς** **οὐ** **Κύκλωψι** **πῶμα** **χρὴ** **δοῦναι** **τόδε,**  
dass nicht dieses,
- [453] **μόνον** **δ’** **ἔχοντα** **βίοτον** **ἡδέως** **ἄγειν.**  
nur aber habend angenehm

- [454] **ὅταν δ' ὑπνώσσῃ Βακχίου νικώμενος**  
wenn aber überwältigt werdend
- [455] **ἀκρεμῶν ἐλαίας ἔστιν ἐν δόμοισί τις,**  
in irgendeiner,
- [456] **ὸν φασγάνω 'γὰ τῷδ' ἀποξύνας ἄκρον,**  
den ich diesem ab gespitzt habend Spitze,
- [457] **ἔς πῦρ καθήσω· κἄθ', ὅταν κεκαυμένου**  
in und dann, wenn geglüht seiend
- [458] **ἴδω νιν, ἄρας θερμὸν ἔς μέσην βαλὼ**  
ihn, erhoben habend heiß in mittlere
- [459] **Κύκλωπος ὄψιν, ὅμμα τ' ἐκτήξω πυρί.**  
auch
- [460] **ναυτηγίαν δ' ώσει τις ἀρμόζων ἀνὴρ**  
aber wie irgendeiner passend machend
- [461] **διπλοῖν χαλινοῖν τρύπανον κωπηλατεῖ,**  
mit beiden
- [462] **οὕτω κυκλώσω δαλὸν ἐν φαεσφόρῳ**  
so in im lichttragenden
- [463] **Κύκλωπος ὄψει καὶ συναυανῶ κόρας.**  
und
- [464] [Χορός]: **ἰοὺ ιού,**  
ioú ioú,
- [465] **γέγηθα, μαινόμεσθα τοῖς εὐρήμασιν.**  
den
- [466] [Οδυσσεύς]: **κάπειτα καὶ σὲ καὶ φίλους γέροντά τε**  
und dann und dich und Freunde auch
- [467] **νεῶς μελαίνης κοῖλον ἐμβῆσας σκάφος**  
schwarzen hohlen eingestiegen habend
- [468] **διπλαῖσι κώπαις τῆσδ' ἀποστελῶ χθονός.**  
mit doppelten von dieser
- [469] [Χορός]: **ἔστ' οὖν ὅπιας ἀν ώσπερεὶ σπονδῆς θεοῦ**  
also wie dass wohl gleichsam wie
- [470] **κάγὼ λαβοίμην τοῦ τυφλοῦντος ὅμματα**  
und ich des blind machenden
- [471] **δαλοῦ; φόνου γὰρ τοῦδε κοινωνεῖν θέλω.**  
denn dieses
- [472] [Οδυσσεύς]: **δεῖ γοῦν· μέγας γὰρ δαλός· οὐ ξυλληπτέον.**  
jedenfalls· groß denn dessen zu ergreifen.
- [473] [Χορός]: **ώς κὰν ἀμαξῶν ἐκατὸν ἀραίμην βάρος,**  
so dass und wohl hundert
- [474] **εἰ τοῦ Κύκλωπος τοῦ κακῶς ὀλουμένου**  
wenn des des schlecht zugrunde gehenden
- [475] **όφθαλμὸν ὕσπερ σφηκιὰν ἐκθύψομεν.**  
gleich wie
- [476] [Οδυσσεύς]: **σιγάτε νῦν· δόλον γὰρ ἔξεπίστασαι·**  
nun· denn
- [477] **χῶταν κελεύω, τοῖσιν ἀρχιτέκτοσι**  
und wenn den
- [478] **πείθεσθ'. ἐγὼ γὰρ ἀνδρας ἀπολιπὼν φίλους**  
ich denn verlassen habend Freunde
- [479] **τοὺς ἔνδον ὄντας οὐ μόνος σωθήσομαι.**  
die drinnen seienden nicht allein
- [480] **καίτοι φύγοιμ' ἄν, κάκβέβηκ' ἄντρου μυχῶν·**  
doch wohl,
- [481] **ἀλλ' οὐ δίκαιον ἀπολιπόντ' ἐμοὺς φίλους,**  
aber nicht gerecht verlassen habend meine Freunde,
- [482] **ξὺν οἴσπερ ἥλθον δεῦρο, σωθῆναι μόνον.**  
mit denen mit denen hierher, allein.

# Chor

## Anapäste

- [483] [Χορός]: ἄγε, τίς πρῶτος, τίς δ' ἐπὶ πρώτῳ  
wer erste, wer aber auf ersten
- [484] ταχθεὶς δαλοῦ κώπην ὀχμάσας  
gestellt worden seiend gefasst habend
- [485] Κύκλωπος ἔσω βλεφάρων ὕσας  
hinein gestoßen habend
- [486] λαμπρὰν ὄψιν διακυναίσει;  
helle
- [487] σίγα σίγα. καὶ δὴ μεθύων  
still still. und ja trunken seiend
- [488] ἄχαριν κέλαδον μουσιζόμενος  
unlieb musik machend
- [490] σκαιὸς ἀπωδὸς καὶ κλαυσόμενος  
ungeschickt unmusikalisch und werde weinen werdend
- [491] χωρεῖ πετρίνων ἔξω μελάθρων  
der steinernen hinaus
- [492] φέρε νιν κώμοις παιδεύσωμεν  
ihn
- [493] τὸν ἀπαίδευτον.  
den Ungebildeten-
- [494] πάντως μέλλει τυφλὸς εἶναι.  
ganz sicher blind

## Strophe 1

- [495] [Ημιχ. Χορός]: μάκαρ ὄστις εὐίάζει  
selig wer immer
- [496] βοτρύων φίλαισι πηγαῖς  
lieben
- [497] ἐπὶ κῶμον ἐκπετασθείς,  
zu aus gespannt worden seiend,
- [498] φίλον ἄνδρ' ὑπαγκαλίζων  
lieben um armend
- [499] ἐπὶ δεμνίοις τε ξανθὸν  
auf auch blonden
- [500] χλιδανῆς ἔχων ἐταίρας  
der üppigen habend
- [501] μυρόχριστος λιπαρὸν βό<sup>ρ</sup>  
salb ölig gesalbt glänzend
- [502] στρυχον, αὐδῷ δέ· Θύραν τίς οἴξει μοι;  
aber· wer mir;

## Strophe 2

- [503] [Κύκλωψ]: παπαπᾶ· πλέως μὲν οἴνου,  
papa-pā· voll zwar
- [504] γάνυμαι δὲ δαιτὸς ἥβη,  
aber
- [505] σκάφος ὀλκὰς ὡς γεμισθεὶς  
wie gefüllt worden seiend
- [506] ποτὶ σέλμα γαστρὸς ἄκρας.  
an der Spitze.
- [507] ὑπάγει μ' ὁ χόρτος εὕφρων  
mich die wohl gesinnt
- [508] ἐπὶ κῶμον ἥρος ὥραις  
zu

- |       |  |
|-------|--|
| [509] | <b>ἐπὶ Κύκλωπας ἀδελφούς.</b>                  |
|       | zu   |
| [510] | <b>φέρε μοι, ξείνε, φέρ', ἀσκὸν ἔνδος μοι.</b> |
|       | mir,<br>hinein<br>mir.                         |

## Strophe 3

- [511] [Χορός]: **καλὸν ὅμμασιν δεδορκώς**  
schön gesehen habend

[512] **Καλὸς ἐκπερῆ μελάθρων.**  
schön

[513] **—παπαπᾶ· φιλεῖ τις ήμᾶς.** —  
—paparapā· jemand uns.

[514] **λύχνα δ' ἀμμένον δαία σὸν**  
aber angezündet seiend brennende deine

[515] **χρόα χώς τέρεινα νύμφα**  
und wie zart

[516] **δροσερῶν ἔσωθεν ἄντρων.**  
tau frischer von innen

[517] **στεφάνων δ' οὐ μία χροιὰ**  
aber nicht eine

[518] **περὶ σὸν κράτα τάχ' ἔξομιλήσει.**  
um deinen bald

# Episode

- [519] [Οδυσσεύς]: **Κύκλωψ**, ἄκουσον· ώς ἔγω τοῦ **Βακχίου**  
dass ich des

[520] **τούτου τρίβων εἴμ', δὸν πιεῖν ἔδωκά σοι.**  
dieses den dir.

[521] [Κύκλωψ]: **ὁ Βάκχιος δὲ τίς θεὸς νομίζεται;**  
der aber welcher

[522] [Οδυσσεύς]: **μέγιστος ἀνθρώποισιν ἐς τέρψιν βίου.**  
größter in

[523] [Κύκλωψ]: **ἔρυγγάνω γοῦν αύτὸν ἡδέως ἔγω.**  
jedenfalls ihn angenehm ich.

[524] [Οδυσσεύς]: **τοιόσδ' ὁ δαίμων· οὐδένα βλάπτει βροτῶν.**  
so beschaffen der keinen

[525] [Κύκλωψ]: **θεὸς δ' ἐν ἀσκῷ πῶς γέγηθ' οἴκους ἔχων;**  
aber in wie habend;

[526] [Οδυσσεύς]: **ὅπου τιθῇ τις, ἐνθάδ' ἔστιν εὔπετής.**  
wo jemand, hier bequem.

[527] [Κύκλωψ]: **οὐ τοὺς θεοὺς χρὴ σῶμ' ἔχειν ἐν δέρμασιν.**  
nicht die in

[528] [Οδυσσεύς]: **τί δ', εἴσε τέρπει γ'; ή τὸ δέρμα σοι πικρόν;**  
was aber, wenn dich doch; oder das dir bitter;

[529] [Κύκλωψ]: **μισῶ τὸν ἀσκόν· τὸ δὲ ποτὸν φιλῶ τόδε.**  
den das aber dieses.

[530] [Οδυσσεύς]: **μένων νυν αύτοῦ πίνε κεύθυμει, Κύκλωψ.**  
bleibend nun hier

[531] [Κύκλωψ]: **οὐ χρή μ' ἀδελφοῖς τοῦδε προσδούναι ποτοῦ;**  
nicht mich dieses

[532] [Οδυσσεύς]: **ἔχων γὰρ αὐτὸς τιμιώτερος φανῆ.**  
haltend denn selbst ehrenvoller

[533] [Κύκλωψ]: **διδοὺς δὲ τοῖς φίλοισι χρησιμώτερος.**  
gebend aber den nützlicher.

[534] [Οδυσσεύς]: **πυγμάς ὁ κῶμος λοίδορόν τ' ἔριν φιλεῖ.**  
der schmählichen und

[535] [Κύκλωψ]: **μεθύω μέν, ἔμπας δ' οὕτις ἀν ψαύσειέ μου.**  
zwar, dennoch aber niemand wohl meiner.

[536] [Οδυσσεύς]: ὡς τάν, πεπωκότ' ἐν δόμοισι χρὴ μένειν.  
o getrunken habende in

[537] [Κύκλωψ]: ἡλίθιος ὄστις μὴ πιῶν κῶμον φιλεῖ.  
töricht wer nicht getrunken habend

[538] [Οδυσσεύς]: δος δ' ἀν μεθυσθείς γ' ἐν δόμοις μείνῃ, σοφός.  
wer aber wohl betrunken geworden doch in weise.

[539] [Κύκλωψ]: τί δρῶμεν, ὥσιληνε; σοὶ μένειν δοκεῖ;  
was o dir

[540] [Σιληνός]: δοκεῖ. τί γὰρ δεῖ συμποτῶν ἄλλων, Κύκλωψ;  
was denn anderer,

[541] [Κύκλωψ]: καὶ μὴν λαχνῶδες τ' οὔδας ἀνθηρᾶς χλόης . . .  
und wahrlich flauiges und der blühenden

[542] [Σιληνός]: καὶ πρός γε θάλπος ἡλίου πίνειν καλόν.  
und zu gewiss gut.

[543] κλίθητί νύν μοι πλευρὰ θεὶς ἐπὶ χθονός.  
nun mir gesetzt habend auf

[544] [Κύκλωψ]: ιδού.  
siehe da.

[545] τί δῆτα τὸν κρατῆρ' ὄπισθέ μου τίθης;  
was denn den hinter mir

[546] [Σιληνός]: ὡς μὴ παριών τις καταβάλη.  
damit nicht vorüber gehend jemand

[546b] [Κύκλωψ]: πίνειν μὲν οὖν  
zwar nun

[547] κλέπτων σὺ βούλη· κάτθες αὐτὸν ἐς μέσον.  
stehlend du ihn in

[548] σὺ δ', ὥξεν', εἰπὲ τοῦνομ' ὅ τι σε χρὴ καλεῖν.  
du aber, o den Namen was irgend dich

[549] [Οδυσσεύς]: Οὔτιν· χάριν δὲ τίνα λαβών σ' ἐπαινέσω;  
Niemand· aber welchen genommen habend dich

[550] [Κύκλωψ]: πάντων σ' ἔταίρων ὕστερον θοινάσσομαι.  
aller dich später

[551] [Σιληνός]: καλόν γε τὸ γέρας τῶν ξένω δίδως, Κύκλωψ.  
schön doch die dem

[552] [Κύκλωψ]: οὗτος, τί δράς; τὸν οἶνον ἐκπίνεις λάθρᾳ;  
du da, was den heimlich;

[553] [Σιληνός]: οὕκ, ἀλλ' ἔμ' οὗτος ἔκυσεν, ὅτι καλὸν βλέπω.  
nicht, sondern mich dieser weil schön

[554] [Κύκλωψ]: κλαύσῃ, φιλῶν τὸν οἶνον οὐ φιλοῦντά σε.  
liebend den nicht liebend dich.

[555] [Σιληνός]: ναὶ μὰ Δί', ἐπεί μού φησ' ἐράν δόντος καλοῦ.  
ja bei da meiner seiend schön.

[556] [Κύκλωψ]: ἔγχει, πλέων δὲ τὸν σκύφον. δίδου μόνον.  
voller aber den nur.

[557] [Σιληνός]: πῶς οὖν κέκραται; φέρε διασκεψώμεθα.  
wie nun

[558] [Κύκλωψ]: ἀπολεῖς· δὸς οὔτως.  
so.

[558b] [Σιληνός]: ναὶ μὰ Δί' οὐ πρὶν ἀν γέ σε  
ja bei nicht eher wohl eben dich

[559] στέφανον ἵδω λαβόντα γεύσωμαί τ' ἔτι . . .  
genommen habend und noch

[560] [Κύκλωψ]: ὥσινοχός ἄδικος.  
o ungerecht.

[560b] [Σιληνός]: οὐ μὰ Δί', ἀλλ' ὥσινος γλυκύς.  
nicht bei sondern o süß.

[561] ἀπομυκτέον δέ σοί ἐστιν ὥσινος λήψῃ πιεῖν.  
aus zu schnäuzen aber dir damit

[562] [Κύκλωψ]: ιδού, καθαρὸν τὸ χεῖλος αἱ τρίχες τέ μου.  
siehe da, rein die die auch meiner.

[563] [Σιληνός]: Θέές νυν τὸν ἀγκῶν' εὐρύθμως, κἄτ' ἔκπιε,  
nun den gleichmäßig, und dann

[564] ὥσπερ μ' ὄρας πίνοντα— χῶσπερ οὐκ ἐμέ.  
so wie mich trinkend— und wie nicht mich.

[565] [Κύκλωψ]: ᾗ ᾗ, τί δράσεις;  
ah ah, was

[565b] [Σιληνός]: ήδεως ἡμύστισα.  
angenehm

[566] [Κύκλωψ]: λάβ', Ὡ ξέν', αὐτὸς οἰνοχόος τέ μοι γενοῦ.  
o selbst und mir

[567] [Οδυσσεύς]: γιγνώσκεται γοῦν ἡ ἅμπελος τὴμῇ χερί.  
jedenfalls die der meinen

[568] [Κύκλωψ]: φέρ' ἔγχεόν νυν.  
nun.

[568b] [Οδυσσεύς]: ἔγχεω, σίγα μόνον.  
nur.

[569] [Κύκλωψ]: χαλεπὸν τόδ' εἴπας, ὅστις ἀν πίνῃ πολύν.  
schwierig dies wer immer wohl viel.

[570] [Οδυσσεύς]: ιδοὺ λαβὼν ἔκπιθι καὶ μηδὲν λίπης.  
siehe da genommen habend und nichts

[571] συνεκθανεῖν δὲ σπῶντα χρὴ τῷ πώματι.  
aber libierend dem

[572] [Κύκλωψ]: παπαῖ, σοφόν γε τὸ ξύλον τῆς ἀμπέλου.  
papai, klug doch das des

[573] [Οδυσσεύς]: κὰν μὲν σπάσης γε δαιτὶ πρὸς πολλῇ πολύν,  
und wohl zwar doch zu vieler Menge viel,

[574] τέγξας ἄδιψον υηδύν, εἰς ὕπνον βαλεῖ,  
benetzt habend durstlosen in

[575] ἦν δ' ἐλλίπης τι, ξηρανεῖ σ' ὁ Βάκχιος.  
wenn aber etwas, wird dich der

[576] [Κύκλωψ]: ιοὺ ιού,  
ioú ioú,

[577] ὡς ἔξενευσα μόγις· ἄκρατος ἡ χάρις.  
wie mühsam ungemischt die

[578] ὁ δ' ούρανός μοι συμμεμιγμένος δοκεῖ  
der aber mir zusammen gemischt

[579] τῇ γῇ φέρεσθαι, τοῦ Διός τε τὸν θρόνον  
der des und den

[580] λεύσσω, τὸ πᾶν τε δαιμόνων ἀγνὸν σέβας.  
das Ganze und heilige

[581] —οὐκ ἀν φιλήσαιμ· — αἱ Χάριτες πειρῶσί με. —  
—nicht wohl die mich.

[582] ἄλις Γανυμήδην τόνδ' ἔχων ἀναπαύσομαι.  
genug den diesen haltend

[583] κάλλιστα, νὴ τὰς Χάριτας. —ήδομαι δέ πως  
am schönsten, bei den aber irgendwie

[584] τοῖς παιδικοῖσι μᾶλλον ἡ τοῖς θήλεσιν.  
den Knaben Geliebten mehr als den

[585] [Σιληνός]: ἐγὼ γὰρ ὁ Διός είμι Γανυμήδης, Κύκλωψ;  
ich denn der

[586] [Κύκλωψ]: ναὶ μὰ Δί', ὃν ἀρπάζω γ' ἐγὼ 'κ τοῦ Δαρδάνου.  
ja bei den doch ich aus des

[587] [Σιληνός]: ἀπόλωλα, παῖδες· σχέτλια πείσομαι κακά.  
schlimme Übel.

[588] [Κύκλωψ]: μέμφη τὸν ἐραστὴν κάντρυφᾶς πεπωκότι;  
den dem getrunken habenden;

[589] [Σιληνός]: οἴμοι· πικρότατον οἶνον ὄψομαι τάχα.  
weh mir bittersten bald.

[590] [Οδυσσεύς]: ἄγε δή, Διονύσου παῖδες, εὐγενῆ τέκνα,  
nun, edle

- [591] **ἔνδον μὲν ἀνήρ· τῷ δ' ὑπω παρειμένος**  
innen doch dem aber hingelegt seiend
- [592] **τάχ' ἐξ ἀναιδοῦς φάρυγος ὡθήσει κρέα.**  
bald aus schamloser
- [593] **δαλὸς δ' ἔσωθεν αὐλίων ὡθεῖ καπνὸν**  
aber von innen
- [594] **παρευτρέπισται· κούδεν ἄλλο πλὴν πυροῦν**  
anderes außer
- [595] **Κύκλωπος ὄψιν· ἀλλ' ὅπως ἀνὴρ ἔσῃ.**  
aber wie
- [596] [Χορός]: **πέτρας τὸ λῆμα κάδαμαντος ἔξομεν.**  
den
- [597] **χώρει δ' ἐς οἴκους, πρὶν τι τὸν πατέρα παθεῖν**  
aber in bevor irgend etwas den
- [598] **ἀπάλαμψον· ὡς σοι τάνθάδ' ἐστὶν εὔτρεπη.**  
Ungehöriges so dass dir die hier bereit.
- [599] [Οδυσσεύς]: **“Ηφαίστη, ἄναξ Αἰτναῖε, γείτονος κακοῦ**  
Ätna ischer, schlechten
- [600] **λαμπρὸν πυρώσας ὅμμ' ἀπαλλάχθηθ' ἕπαξ,**  
hell angefeuert habend einmal,
- [601] **σύ τ', ὦ μελαίνης Νυκτὸς ἐκπαίδευμ', “Ὕπνε,**  
du doch, o der schwarzen
- [602] **ἄκρατος ἐλθὲ θηρὶ τῷ θεοστυγεῖ,**  
ungemischt dem götter verhassten,
- [603] **καὶ μὴ 'πὶ καλλίστοισι Τρωικοῖς πόνοις**  
und nicht auf schönsten troischen
- [604] **αὐτὸν τε ναύτας τ' ἀπολέσητ' Όδυσσέα**  
ihn und und
- [605] **Ὕπ' ἀνδρός, ω̄ θεῶν οὐδὲν ἢ βροτῶν μέλει.**  
von dem nichts oder
- [606] **ἢ τὴν τύχην μὲν δαιμόνιον' ἡγεῖσθαι χρεών,**  
entweder das zwar
- [607] **τὰ δαιμόνων δὲ τῆς τύχης ἐλάσσονα.**  
die aber des geringeren.

## Lyrik

- [608] [Χορός]: **λήψεται τὸν τράχηλον**  
den
- [609] **ἐντόνως ὁ καρκίνος**  
heftig der
- [610] **τοῦ ξενοδαιτυμόνος· πυρὶ γὰρ τάχα**  
des denn bald
- [611] **φωσφόρους ὀλεῖ κόρας.**  
licht tragenden
- [612] **ἥδη**  
schon
- [613] **δαλὸς ἡνθρακωμένος**  
verkohlt worden seiend
- [615] **κρύπτεται ἐς σποδιάν, δρυδὸς ἄσπετον**  
in unermeßlich
- [616] **ἔρνος· ἀλλ' ἵτω Μάρων·**  
aber
- [616a] **πρασσέτω·**
- [617] **μαινομένου 'ξελέτω βλέφαρον Κύ**  
des Rasenden Ky
- [618] **κλωπός, ως πίη κακῶς.**  
damit schlecht.
- [619] **κάγὼ**  
und ich

- [620] **τὸν φιλοκισσοφόρον Βρόμιον πο**  
den Efeu lieb tragend po
- [621] **θεινὸν εἰσιδεῖν θέλω,**  
sehnenswert
- [622] **Κύκλω**  
Kyklō
- [622a] **πος λιπὼν ἐρημίαν.**  
pos verlassen habend
- [623] **ἄρ' ἐς τοσόνδ' ἀφίξομαι;**  
wohl in so viel
- [624] [Οδυσσεύς]: **σιγάτε πρὸς θεῶν, θῆρες, ἡσυχάζετε,**  
bei
- [625] **συνθέντες ἄρθρα στόματος· οὐδὲ πνεῖν ἔω,**  
zusammen gefügt habend auch nicht
- [626] **οὐ σκαρδαμύσσειν οὐδὲ χρέμπτεσθαί τινα,**  
nicht auch nicht irgend jemanden,
- [627] **ώς μὴ 'ξεγερθῇ τὸ κακόν, ἔστ' ἂν ὅμματος**  
damit nicht das Übel, bis wohl
- [628] **ὅψις Κύκλωπος ἔξαμιλληθῇ πυρί.**
- [629] [Χορός]: **σιγῶμεν ἐγκάψαντες αἰθέρα γνάθοις.**  
eingebrannt habend
- [630] [Οδυσσεύς]: **ἄγε νῦν ὅπως ἄψεσθε τοῦ δαλοῦ χεροῖν**  
nun wie des
- [631] **ἔσω μολόντες· διάπυρος δ' ἔστὶν καλῶς.**  
hinein gekommen seiend· glühend aber gut.
- [632] [Χορός]: **οὐκοῦν σὺ τάξεις οὕστινας πρώτους χρεῶν**  
demnach du welche erste
- [633] **καυτὸν μοχλὸν λαβόντας ἔκκαειν τὸ φῶς**  
brennenden genommen habend das
- [634] **Κύκλωπος, ώς ἂν τῆς τύχης κοινώμεθα;**  
damit wohl des
- [635] [Χορός A]: **ἡμεῖς μέν ἔσμεν μακροτέρω πρὸ τῶν θυρῶν**  
wir zwar weiter vor der
- [636] **ἔστῶτες ὥθειν ἐς τὸν ὄφθαλμὸν τὸ πῦρ.**  
stehend seiend in das das
- [637] [Χορός B]: **ἡμεῖς δὲ χωλοί γ' ἀρτίως γεγενήμεθα.**  
wir aber lahm doch soeben
- [638] [Χορός Γ]: **ταύτὸν πεπόνθατ' ἄρ' ἐμοί· τοὺς γὰρ πόδας**  
das gleiche wohl mir· die denn
- [639] **ἔστῶτες ἔσπάσθημεν οὐκ οἴδ' ἐξ ὅτου.**  
stehend seiend nicht aus woher.
- [640] [Οδυσσεύς]: **ἔστῶτες ἔσπάσθητε;**  
stehend seiend
- [640b] [Χορός Δ]: **καὶ τά γ' ὅμματα**  
und die doch
- [641] **μέστ' ἔστὶν ἡμῖν κόνεος ἢ τέφρας ποθέν.**  
voll uns oder irgendwoher.
- [642] [Οδυσσεύς]: **ἄνδρες πονηροὶ κούδὲν οἶδε σύμμαχοι.**  
schlechte diese
- [643] [Χορός]: **ότιὴ τὸ νῶτον τὴν ράχιν τ' οἰκτίρομεν**  
weil den die und
- [644] **καὶ τοὺς ὄδόντας ἐκβαλεῖν οὐ βούλομαι**  
und die nicht
- [645] **τυπτόμενος, αὔτη γίγνεται πονηρία;**  
geschlagen werdend, dies
- [646] **ἀλλ' οἴδ' ἐπωδὴν Ὄρφέως ἀγαθὴν πάνυ,**  
aber gute sehr,
- [647] **ώς αὐτόματον τὸν δαλὸν ἐς τὸ κρανίον**  
dass selbst wirkend den in den

- [648] στείχονθ' ύφαπτειν τὸν μονῶπα παῖδα γῆς.  
gehend den einäugigen
- [649] [Οδυσσεύς]: πάλαι μὲν ἥδη σ' ὄντα τοιοῦτον φύσει,  
schon lange zwar dich seiend so beschaffen
- [650] νῦν δ' οἴδ' ἄμεινον. τοῖσι δ' οἰκείοις φίλοις
- [651] χρῆσθαί μ' ἀνάγκη. χειρὶ δ' εἰ μηδὲν σθένεις,  
mich aber wenn nichts
- [652] ἀλλ' οὖν ἐπεγκέλευε γ', ὡς εὔψυχίαν  
aber nun doch, damit
- [653] φίλων κελευσμοῖς τοῖσι σοῖς κτησώμεθα.  
den deinen
- [654] [Χορός]: δράσω τάδ'. ἐν τῷ Καρὶ κινδυνεύσομεν.  
dieses. in dem
- [655] κελευσμάτων δ' ἔκατι τυφέσθω Κύκλωψ.  
aber wegen

## Lyrik

- [656] [Χορός]: ίω ίω· γενναιότατ' ὡ<sup>ν</sup>  
io io· edelster
- [657] θεῖτε σπεύδετ'. ἔκκαιετε τὰν ὄφρὺν  
die
- [658] θηρὸς τοῦ ξενοδαίτα  
des
- [659] τυφέτω, καιέτω
- [660] τὸν Αἴτνας μηλονόμον.  
den
- [661] τόρνευ', ἔλκε, μή σ' ἔξιδυνηθεὶς  
nicht dich schmerz gequält
- [662] δράσῃ τι μάταιον.  
etwas vergeblich es.
- [663] [Κύκλωψ]: ὕμοι, κατηνθρακώμεθ' ὄφθαλμοῦ σέλας.  
weh mir,
- [664] [Χορός]: καλός γ' ὁ παιάν· μέλπε μοι τόνδ', ὦ Κύκλωψ.  
schön doch der mir diesen, o
- [665] [Κύκλωψ]: ὕμοι μάλ', ώς ὑβρίσμεθ', ώς ὀλώλαμεν.  
weh mir sehr, wie wie
- [666] ἀλλ' οὕτι μὴ φύγητε τῇσδ' ἔξω πέτρας  
aber keineswegs nicht dieser hinaus
- [667] χαίροντες, οὐδὲν ὄντες· ἐν πύλαισι γὰρ  
sich freuend, nichts seiend bei denn
- [668] σταθεὶς φάραγγος τάσδ' ἐναρμόσω χέρας.  
gestellt worden diese
- [669] [Χορός]: τί χρῆμ' ἀυτεῖς, ὦ Κύκλωψ;  
was o
- [669b] [Κύκλωψ]: ἀπωλόμην.
- [670] [Χορός]: αἰσχρός γε φαίνη.  
schändlich doch
- [670b] [Κύκλωψ]: κάπι τοῖσδε γ' ἄθλιος.  
und auf diesen doch elend.
- [671] [Χορός]: μεθύων κατέπεσες ἐς μέσους τοὺς ἄνθρακας;  
betrunkene in mittlere die
- [672] [Κύκλωψ]: Οὗτίς μ' ἀπώλεσ'.  
Niemand mich
- [672b] [Χορός]: οὐκ ἄρ' οὐδεὶς ἡδίκει.  
nicht doch niemand
- [673] [Κύκλωψ]: Οὗτίς με τυφλοῖ βλέφαρον.  
Niemand mich

[673b] [Χορός]:

**οὐκ ἄρ' εἰ τυφλός.**  
nicht doch blind.

[674] [Κύκλωψ]: **ώς δὴ σύ—**  
wie doch du—

[674b] [Χορός]: **καὶ πῶς σ' οὕτις ἀν θείη τυφλόν;**  
und wie dich niemand wohl blind;

[675] [Κύκλωψ]: **σκώπτεις. ὁ δὲ Οὔτις ποῦ στιν;**  
der aber Niemand wo

[675b] [Χορός]: **οὐδαμοῦ, Κύκλωψ.**  
nirgendwo,

[676] [Κύκλωψ]: **ὁ ξένος, ἵν' ὅρθως ἐκμάθης, μ' ἀπώλεσεν,**  
der damit richtig mich

[677] **ὁ μιαρός, ὃς μοι δοὺς τὸ πῶμα κατέκλυσεν.**  
der Unreine, der mir gegeben habend den

[678] [Χορός]: **δεινὸς γὰρ οἴνος καὶ παλαιέσθαι βαρύς.**  
furchtbar denn und schwer.

[679] [Κύκλωψ]: **πρὸς θεῶν, πεφεύγασ' ἢ μένουσ' ἔσω δόμων;**  
bei oder drinnen

[680] [Χορός]: **οὗτοι σιωπῇ τὴν πέτραν ἐπήλυγα**  
diese den

[681] **λαβόντες ἐστήκασι.**  
genommen habend

[681b] [Κύκλωψ]: **ποτέρας τῆς χερός;**  
welcher der

[682] [Χορός]: **ἐν δεξιᾷ σου.**  
in rechter deiner.

[682b] [Κύκλωψ]: **ποῦ;**  
wo;

[682c] [Χορός]: **πρὸς αὐτῇ τῇ πέτρᾳ.**  
an derselben dem

[683] **ἔχεις;**

[683b] [Κύκλωψ]: **κακόν γε πρὸς κακῷ τὸ κρανίον**  
übel doch zu den

[684] **παίσας κατέαγα.**  
geschlagen habend

[684b] [Χορός]: **καὶ σε διαφεύγουσί γε.**  
und dich doch.

[685] [Κύκλωψ]: **οὐ τῇδ' ἐπεὶ τῇδ' εἴπας;**  
nicht dieser da dieser

[685b] [Χορός]: **οὐ· ταύτῃ λέγω.**  
nein dortherin

[686] [Κύκλωψ]: **πῇ γάρ;**  
wohin denn;

[686b] [Χορός]: **περιάγου, κεῖσε, πρὸς τάριστερά.**  
dortherin zu den Linken.

[687] [Κύκλωψ]: **οἵμοι γελῶμαί κερτομεῖτέ μ' ἐν κακοῖς.**  
weh mir mich in Übeln.

[688] [Χορός]: **ἀλλ' οὐκέτ', ἀλλὰ πρόσθεν οὗτός ἐστί σου.**  
aber nicht mehr, sondern vorne dieser von dir.

[689] [Κύκλωψ]: **ὦ παγκάκιστε, ποῦ ποτ' εἴ;**  
o allerschlechtester, wo denn

[689b] [Οδυσσεύς]: **τηλοῦ σέθεν**  
weit von dir

[690] **φυλακαῖσι φρουρῶ σῶμ' Όδυσσέως τόδε.**  
dieses.

[691] [Κύκλωψ]: **πῶς εἴπας; ὄνομα μεταβαλὼν καινὸν λέγεις.**  
wie verändernd neues

[692] [Οδυσσεύς]: **ὅπερ γ' οὐ φύσας ὥνομαζ' Όδυσσέα.**  
dasselbe doch der gezeugt habende

- [693] δώσειν δ' ἔμελλες ἀνοσίου δαιτὸς δίκας·  
aber der unheiligen
- [694] κακῶς γὰρ ἀν Τροίαν γε διεπυρωσάμην  
schlecht denn wohl doch
- [695] εἰ μή σ' ἐταίρων φόνον ἔτιμωρησάμην.  
wenn nicht dich
- [696] [Κύκλωψ]: αἰδī· παλαιὸς χρησμὸς ἐκπεραίνεται.  
weh- alter
- [697] τυφλὴν γὰρ ὄψιν ἐκ σέθεν σχήσειν μ' ἔφη  
blinde denn aus von dir mich
- [698] Τροίας ἀφορμηθέντος. ἀλλὰ καὶ σέ τοι  
aufgebrochen seiend. aber und dich doch
- [699] δίκας ὑφέξειν ἀντὶ τῶνδ' ἔθεσπισεν,  
statt dieser
- [700] πολὺν θαλάσσῃ χρόνον ἐναιωρούμενον.  
viel umher treibend.
- [701] [Οδυσσεύς]: κλαίειν σ' ἄνωγα· καὶ δέδραχ' ὅπερ λέγεις.  
dich und das was
- [702] ἔγὼ δ' ἐπ' ἀκτὰς εἴμι καὶ νεώς σκάφος  
ich aber auf und
- [703] ἥσω 'πὶ πόντον Σικελὸν ἵς τ' ἐμὴν πάτραν.  
auf sizilisch in und meine
- [704] [Κύκλωψ]: οὐ δῆτ', ἐπεί σε τῆσδ' ἀπορρήξας πέτρας  
nicht im Geringsten, weil dich dieser abgerissen habend
- [705] αύτοῖσι συνναύταισι συντρίψω βαλών.  
mit denselben geworfen habend.
- [706] ἄνω δ' ἐπ' ὄχθον εἴμι, καίπερ ἀν τυφλός,  
hinauf aber auf obwohl seiend blind,
- [707] δι' ἀμφιτρῆτος τῆσδε προσβαίνων ποδί.  
durch der ringsum geborenen dieser Fels hinzu gehend
- [708] [Χορός]: ἡμεῖς δὲ συνναῦται γε τοῦδ' Ὄδυσσέως  
wir aber doch dieses
- [709] ὄντες τὸ λοιπὸν Βακχίῳ δουλεύσομεν.  
seiend das Übrige